JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण में विविध शास्त्रीय तत्त्व

डॉ0 शक्ति पाण्डेय लेखिका

महर्षि वाल्मीकि का विपुल संस्कृत वाङ्मय मे ं महत्त्वपू र् स्थान है क्योकि जिस प्रकार श्रुतियाँ जिस परम तत्त्व 'ब्रह्म' की महिमा का गायन करती हुई पत्र ित होती है, उसी प्रकार उन्होंन े 'राम' की सज्ञं ा स े अभिहित परमब्रह्म के अवतारी राम मर्यादा पुरूषोत्तम का गुणानुवाद किया है। वाल्मीकि जी ने वेद सदृश ज्ञान क े अक्षय भण्डार रूप रामायण महाकाव्य का प्रणयन कर महर्षि प्राचेतस 'आदिकवि' की सज्ञं ा से लोक विश्रुत हुए। महर्षि वाल्मीकि विरचित इस आदिकाव्य में जो वैशिष्टय उपलब्ध है उसी विशेषता को कालान्तर में काव्य हेतु आवश्यक तत्त्व व लक्षण के रूप मे ं लक्षण कार मानीषियो ं द्वारा सहर्ष स्वीकार कर प्रचलन मे ं लाया गया। रामायण ही मानव जीवन का व्याख्यान है, इसमे ं श्रेयस्कर माग र् दर्शक ज्ञान का प्रकाश विद्यमान है। यह हमारे सांसारिक व्यवहार का उपदेश कर्ता आचार्य है। इसमें सदाचार एव ं धर्म शास्त्र का सम्यक ् परिपाक किया जाता है। रामायण महाकाव्य अपने विशिष्ट उदात्त स्वरूप, भाषा, काव्य गुणो ं की अन्विति, मनाहे ारी भावो ं एव ं प्राञ्जलता के कारण लोक पिय्र हो सका है। इसमें भारतीय सस्ं कृति एव ं सस्ं कारो ं का सम्यक् समावेश करने के साथ ही महर्षि वाल्मीकि ने तत्कालीन सभ्यता का सुस्पष्ट चित्रांकन किया है। इस महाकाव्य क े अन्तर्गत आचार–संहिता का सकं लन,

नीति पूर्ण शिक्षाओ ं का संग्रह, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेदादि का यथातथ्य उपभोग अर्थ गौरव व गाम्भीर्य, सुललित पद समन्वय, धार्मिक भावव्यञ्जना तथा छन्द व अलंकारों का सन्निवशे ा महाकाव्य मे ं चारूता वृद्धि करने में सहायक हैं। इसीलिए श्री भोजराज ने अपने रामायण चम्पू ग्रन्थ मे ं महर्षि वाल्कीकि को मधुर रचना प्रचार चतुर कवियो ं का मार्गदर्शन माना है–

मधुमयभणितीनां मार्गदर्शी महर्षिः[1] ।

महर्षि वाल्मीकि दूरदृष्टा, कवि थे इसलिए उन्होंन े स्वयं ही रामायण महाकाव्य की लोक प्रतिष्ठा एव ं शाश्वतता के संदर्भ मे ं लिखा है–

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः, सरितश्च महीतले तावद् रामायण
कथा, लोकेषु प्रचरिष्याति।।[2]

यह रामायण नवरस रूचिरा कृति के रूप मे ं सर्वमान्य है क्योकि इसमें यथावसर सभी रसो ं का परिपाक दृष्टिगत हाते ा है। विप्रलम्भ एव ं करूण रस की अभिव्यक्ति तो चरम उत्कर्ष प्राप्त है। इस महाकाव्य मे ं कहीं दर्शन, कहीं आगम, कहीं उपनिषद्, कही ं स्मृतियो ं और कहीं नीतिशास्त्र की छटा दिखाई देती है ता ंकहीं विज्ञान, मनोविज्ञान, आयुर्वेद, धनुर्वेद ज्योतिष, एवं तंत्रशास्त्र आदि का सार समुच्चय प्रतिबिम्बित होता है। दार्शिनिकता भाव के कुछ श्लोक अवलोकनीय है–

''त्वं गतिः परमा देवसर्वेषां नः परन्तपः। वधाय देवशत्रणू ाां नृणां लोके मनः कुल।।''[3] अर्थात मुनियो ं सहित सिद्ध गन्धर्व, यक्ष तथा देवता एकत्र होकर परमेश्वर स ं कहते हैं कि–हे शत्रअु ों को संताप देन ं वाले दवे ! आप ही हम सबलोगो ं की परम गति, हैं अतः इन देवद्रोहियो ं का वध करने के लिए आप मनुष्य लोक मे ं अवतार लने ं का निश्चय कीजिए। यहाँ देवताओं आदि का परमात्मा क ं प्रति दार्शनिक भावाभिव्यक्ति है। आगे चलके र अयोध्याकाण्ड में भी यहीं अवधारणा ध्वनित होती है– स हि दवैरूदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः। अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णुः सनातन।।[4] अर्थात– सनातन् भगवान् विष्णु की अवधारणा का प्रमुख कारण यही था कि वे परम प्रचण्ड रावण के वध की अभिलाषा रखने वाल ं देवताओ ं की प्रार्थना पर धराधाम पर आए। यद्यपि इस दृढ़ विश्वास का परम् कारण यह था कि महायशस्वी श्री रामचन्द्र जी चराचर सहित सम्पूर्ण लोगो ं का संहार करके पुनः उनका नव निर्माण करने की शक्ति रखते हैं। महर्षि लिखते हैं–

सर्वलोकान् सुसंहृत्य सभूतान् सचाराचरान। पुनरेव तथा स्रष्टुं शक्तो रामो महायशाः।।[5] उक्त दृढ़ता विशेष रूप से भक्त प्रवर हनुमान जी क ं अर्न्तमन मे ं भी जिसे उन्होंन ं लंकाधिराज रावण के सम्मुख समझाने लिए व्यक्ति करते हैं। श्रीराम द्वारा राक्षसेन्द्र लंकाधिप रावण का वध किए जाने के बाद हर्षित देवादि श्रीराम क ं ऊपर पुष्प वर्षा करने लगत ं हैं। यह देखकर गोलोकवासी महाराज दशरथ स्वर्ग स ं रथ पर आरूढ़ हाके र राम लक्ष्मण को प्रत्यक्ष मिलने आकाश मार्ग मे ं आते हैं और भयू ोयूप श्रीराम की प्रशसं ा करते हुए सौमित्र को इस प्रकार समझााते हैं कि पत्रु लक्ष्मण शत्रअु ों को संताप देन ं वाले ये श्रीराम देवताओ ं क ं हृदय एवं परम गुह्म तत्व है ये ही वेदां ं द्वारा प्रतिपादित अव्यक्त एवं विनाशी ब्रह्म है–

एतत् तदुक्तमव्यक्तमक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। देवाना ं हृदयं सौम्य गुह्म ं रामः परन्तमः।।[6] महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत रामायण मे ं ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ श्रीराम को ब्रह्म का साक्षात् अवतार सिद्ध किया गया है। क्योकि ब्रह्म ही वह परम शक्तिमान सत्ता सम्पन्न होता है जो समस्त लोको ं क` नियंत्रण एवं संचालन का दायित्व संवहन करते हुए लोक सन्तुलन क` प्रति सचेष्ट रहता है। बह्म क ` अवतार लेन` के अनेक प्रमुख बिन्द ु व परिस्थितियां हाते ी है जिसका उल्लेख

द्वापर में नारायणावतार भगवान श्री कृष्ण ने अपने श्री मख ु ा से स्वयं व्यक्त किया है–

यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। इस कथन का सरलीकरण करते हुए
गोस्वामी तुलसी दास ने अपने रामचरित मानस मे ं भी कहा है–

जब जब होई धरम कै हानी।
बाढ़इ असुर महाअभिमानी।। तब–तब धरि
प्रभु मनुज शरीरा। हरहि ं निरन्तर सज्जन पीरा।।

इस तथ्य की पुष्टि करते हुए अगस्त्य ऋषि के द्वारा महर्षि वाल्मीकि ने इस प्रकार कहलाया है–

''भगवान् नारायणो दवे श्तुर्बाहुः सनातनः। राक्षसान्
हन्तुमुत्पन्नो हयजयः प्रभुरव्ययः।।'' नष्ट धर्म व्यवस्थानां काले
काले प्रजाकरः। उत्तपद्यते दस्युवध` शरणागत वल्सलः।।''

अर्थात हे राम! आप साक्षात् चार भुजाधारी सनातन देव भगवान नारायण ही हैं। आपको कोई परास्त नहीं कर सकता। आप अविनाशी पुरूष हैं और राक्षसो ं का वध करने के लिए इस लोक मे ं अवतीर्ण हुए है। आप ही इन प्रजाओ ं क` स्रष्टा हैं और शरणागतो ं पर उनदस्युओं का वध करने के लिए आप समय–समय पर अवतार लते` रहते हैं। इस महाकाव्य मे ं युद्ध क्षेत्र मे ं घायल योद्धाओं का उपचार आयुर्वेदिक औषधियो ं क` माध्यम स` ही किया जाता रहा है। इसका स्पष्ट प्रमाण रामायण क` यद्धु काण्ड मे ं अधोड़िकत श्लोको में अवलोकनीय है–

एवमुक्तः स रामेण महात्मा हरियूथवः। लक्ष्मणाय
ददौ नस्तः सुषेण परमौषधम्।। स तस्य गन्धमाघ्राय

विशल्यः समयद्यत। तदा निर्वेदनचैव सरूं ढव्रण एव च।।[7]

अयोध्याकाण्ड मे ं ज्योतिषशास्त्र का भी प्रतिबिम्ब दृग्गत होता है इससे स्पष्ट होता है कि महर्षि वाल्मीकि ज्योतिर्विद भी थ ` जिन्हें ज्योतिः शास्त्र का सम्यक ज्ञान था इसीलिए व ` लिखत `हैं–

त्रिशंकुर्लोहिताङ्गश्रच वृहस्पति बुधावपि। दारूणाः सोममभ्येत्य ग्रहाः सर्वे व्यवस्थिताः।।[8]

अवष्टब्धश्रच मे ं राम नक्षत्रं दारूणग्रहैः। आवदयन्ति दैवज्ञाः सूर्यङार कराहुभिः।[9]

युद्ध क ` समय रावण द्वारा इन्द्रजित् मेघनाद की शूरता एंव पराक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा करने पर उत्साहित मेघनाद युद्ध क्षेत्र मे ं पहुचं कर सैनिको ं स ` आवृत स्थल का चयन कर एक अभिचारिक यज्ञ का समाचार किया। उस यज्ञ मे ं अग्निवेदी क ` चारो ं बिछाने के लिए कुश या काश तथा बहेड़ ` की लकड़ी से समिधा का काम लिया गया लाल रंग क ` कपड़ ` का उपयोग किया गया तथा लोहे का स्रुवा उपयुक्त किया गया। उसने वहाँ तामे र सहित शस्त्ररूपी द्वारा काश को अग्नि के चतुर्दिक विस्तीर्ण कर होम क ` लिए काले रंग क ` जीवित बकरे का गला पकड़ा। इस प्रकार एक ही बारदी हुई उस आहूति से अग्नि प्रज्जवलित हो उठी। श्लोक द्रष्टव्य हैं जो तांत्रिक प्रयोग की ओर संकेत करते हैं–

लोहितानि च वासांसि स्त्रुवं कार्णामस ं तथा स तथाग्निं समास्तीर्य शरपत्रैः सतोमरपरैः।। छागस्य कृष्ण वर्णस्य गलं जाग्रह जीवितः। सकृदेव समिद्धस्य विधूमस्य महार्चिषः।। वभूवुस्तानि लिङ ं ानि विजयं यान्यदर्शनम्।।[10] शास्त्रीय नीति विद्या में निष्णात दशरथ नन्दन भगवान राम अपने अनुज भरत क ` चित्रकूट आगमन पर उनका कुशल क्षेम पूँछते हुए सभी क ` प्रति समादर का भाव व्यक्त कर प्रकारान्तर से अयोध्या का विस्तृत समाचार ज्ञात करते हैं और उसी श्रृंखला मे ं भरत जी को संकेतो से राजनीति शास्त्र की शिक्षा भी देत ` हैं। किसी भी राजा की सफलता किन–2 बातो ं पर निर्भर करती है इसका प्रतीकात्मक विवचे न भी राम जी क ` श्री मुख से

भरत मिलन प्रसगं में महर्षि वाल्मीकि जी ने अयोध्या में इस प्रकार किया है–

क्वचिदात्म समाः शूराः श्रुतवन्ता ` जितेन्द्रियाः।
कुलीनाश्रेचडि–तज्ञाश्रच कृतास्ते तातमन्त्रिणः।। मंत्रो विजय
मूलं हि राज्ञां भवति राघव। सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः
शास्त्रकोविदैः।।[11]

अर्थात् भगवान् राम भरत को प्रश्नावली क` माध्यम से राजसत्ता की सफलता का संकेत करते हुए पूँछत` है कि तात! क्या आपने अपने ही समान शरू वीर, शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, कुलीन तथा बाहरी चेष्टाओ ं स` ही मन की बात समझ लेन` वाले सुयोग्य व्यक्तियो ं को ही मन्त्रिपद दिया है? क्योकि हे रघुनन्दन अच्छी मन्त्रणा ही राजाओ ं की विजय का मूलकारण है। वह भी तभी सफल हाते ी है, जब नीतिशास्त्र निपुण मन्त्रिशिरामे णि अमात्य उस` सर्वथागुप्त रखें। इस प्रकार रामायण मे ं अनेक ऐसे स्थल दृष्टि गोचर हाते` हैं जहाँ स` राजनीतिक ज्ञान सहज सुलभ है। अतः सम्पृक्त राजनेताओं को इसका सम्यक् अध्ययन कर राजनीतिक पहलुआ` स` उत्तम शिक्षा ग्रहण कर तदवत् अनुपालन करना चाहिए। मनोविज्ञान की भी मधुरिम छटा इस महाकाव्य मे ं विद्यमान है। अयोध्या स` वन क` लिए प्रस्थान करते समय भगवान राम जानकी स` मिलने जाते हैं, और उन्हे ं अयोध्या म` रहने की सलाह देत` हुए समझाते हैं कि आज मैं पिता जी की आज्ञा मानकर वन के लिए प्रस्थित हा` गया हूँ और तुमसे मिलन` आया हूँ। तुम भरत के सामने मरे ी कभी भी प्रशंसा नहीं करना क्योंकि समृद्धि शाली पुरूष दूसरे की स्तुति सहन नहीं तक पाते हैं।

श्लोक दृष्टव्य है–

सोऽहं त्वामागतो द्रष्टुं प्रस्थितो विजनं वनम्।
भरतस्य समीपे ते नाहं कथ्यःकदाचन।। ऋषि युक्ता हि
पुरूषा न सहन्ते परस्तवम्। तस्मात्रत ` गुणा
कथ्याभरतस्याग्रतो मम।।[12]

इस महाकाव्य मे ं ऐसे अनेक स्थल व दृश्य उपस्थापित हुए हैं जहाँ अर्थशास्त्र का सम्यक् स्वरूप छलकता है, संसार का सुख मूल तत्व अर्थ ही है क्योकि

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स
पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स
च दर्शनीयः सर्वे गुणाः कानमाश्रयन्ति।।

कोई भी देश समृद्धिशाली तभी कहा जाता है जब वहाँ का वाणिज्यक उच्च कोटि का हो ।अनेक प्रकार की मुद्राओ ं का निर्माण हों उनमे ं अनेक प्रकार की शिल्प कला एवं कौशल प्रवृत्त हो, कृषिकार्य में समुन्नति हो, गोसेवा एव ं गोपालन का कार्य श्रद्धापवू र्क किया जाता हो। प्राचीन काल मे ं सभी अर्थकारी साधन हुआ करते थे। रामायण मे ं इनक` उद्धारण इस प्रकार प्रस्तुत हैं–

(1) स तं कैलाश श्रृंगाय प्रसादं रघुनन्दनः।
(2) सा हिरण्यं च गाश्चैच्व रत्नानि विविधानि च।
(3) नाना पण्य समृद्धेषु वाणिजयापणेषु च।
(4) अलंकार विधि ं सम्यक् कारयामास वेश्मनः।
(5) वैहारिकाणां शिल्वानां विज्ञातार्थ विभागावित।

उपर्युक्त पंक्तियाँ रामायण कालीन भारत की अर्थशास्त्र निष्णातता एवं आर्थिक समृद्धि का उद्घोष करती है। धर्मशास्त्र की शिक्षा का तो आधार स्तम्भ ही है यह महाकाव्य। धर्माचरण एंव धर्म संरक्षण का पदे–पदे उपदेश इस महाकाव्य मे ं सन्निहित है। निःसदं `ह जीवन की सफलता हेतु लोकाचार–व्यवहार का सम्यक् ज्ञान इस महाकाव्य द्वारा सहज सुलभ हो जाता है। क्योंकि लौकिक व्यवहार ज्ञान के अभाव में शास्त्रज्ञ भी अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं। पंचतंत्र मे ं इसका स्पष्ट सकं `त प्राप्त होता है–

''अपि शास्त्रेषु कुशलाः लोकाचार विवर्जिताः।।'' अतएव यह कहा जा सकता है कि रामायण महाकाव्य एक ऐसा महाकाव्य है जो अनेक ग्रंथो ं का उत्पादक उपजीव्य आदि काव्य तो है ही उसमं ` अनेक प्रकार के विषयों का ज्ञान प्राप्त हाते ा है। काव्य शास्त्रीय ज्ञान के अतिरिक्त इस ग्रन्थ मे ं विविध शास्त्रो ं क` गढू. ज्ञान का सम्ब्यहू न किया गया है। महर्षि वाल्मीकि जी क` इस अवदान हेतु हमारा सम्पण्ू ा वाङ्मय जगत सदैव आभारी रहेगा। ।।

की वर्ड– वाल्मीकि रामायण का शास्त्रीय महत्त्व, वाल्मीकि रामायण मे ं शास्त्रीय दर्शन का समागम

1. चम्पूरामायणम्, श्रीभोजराजसार्वभौम विरचित, व्याख्याकार पं0 रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री, प्रकाशन चौखम्बा वाराणसी, स0ं 2017, पृ0–1–8

2. श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण, महाकवि वाल्मीकि, गीता पेस्र गोरखपुर, सं0 2016 पृ0 2—36

3. वही, बालकाण्ड, 15—26

4. वही अयोध्याकाण्ड 1—7

5. वही, सुन्दरकाण्ड 5／39

6. वही युद्धकाण्ड 114—32

7. वही, युद्धकाण्ड 91—24, 25

8. वहीं, अयोध्याकाण्ड 41—11

9. वहीं, अयोध्याकाण्ड 4—19

10. वहीं, युद्धकाण्ड 93, 24 25, 26

11. वहीं, अयोध्याकाण्ड 100—15—16

12. वहीं, अयोध्याकाण्ड 26—24—25